परिवार में व्यवस्था

संबंध की समझ
–सम्मान

परिवार में व्यवस्था

1. संबंध है– मैं का मैं से
2. संबंध में भाव है– एक मैं की दूसरे मैं के प्रति
3. इन भावों को पहचाना जा सकता है– निश्चित हैं 9
4. इन भावों के निर्वाह एवं मूल्यांकन से उभय सुख होता है।

भावः–

1. विश्वास Trust आधार मूल्य
2.. सम्मान Respect
3. स्नेह Affection
4. ममता Care
5. वात्सल्य Guidance
6. श्रद्धा Reverence
7. गौरव Glory
8. कृतज्ञता Gratitude
9. प्रेम Love पूर्ण मूल्य

Respect (सम्मान)

सम्मान = सम् + मान

↓ ↓

सम्यक् मापना

↓ ↓

ठीक ठीक ऑकलन करना

Respect = Right Evaluation

Over evaluation – to evaluate for more than what it is

अधिमूल्यन अधिक आंकलन करना

Under evaluation – to evaluate for less than what it is

अवमूल्यन कम आंकलन करना

Otherwise evaluation – to evaluate for other than what it is

अमूल्यन अन्यथा आंकलन करना

Disrespect

अपमान

आंकलन का सही न होना अपमान है।

अपने हर आचरण/व्यवहार में जाँचे – यह सम्मान है या अपमान

जाँचने पर हम पाते हैं कि हमारे अधिकांश व्यवहार में उपरोक्त तीन हो रहे हैं जो कि अपमान है।

सम्मान–सम्यक आंकलन– मैं के आधार पर

1. Purpose लक्ष्य
   - मैं निरंतर सुख समृद्धिपूर्वक जीना चाहता हूँ।
   - दूसरा भी निरंतर सुख समृद्धिपूर्वक जीना चाहता हूँ।

   हमारा लक्ष्य भी एक है(सहज स्वीकृति के आधार पर)

2. Program कार्यक्रम
   - हर स्तर पर व्यवस्था को समझना एवं व्यवस्था में जीना हमारे सुख समृद्धिपूर्वक जीने का कार्यक्रम है।
   - हर स्तर पर व्यवस्था को समझना एवं व्यवस्था में जीना दूसरे के सुख समृद्धिपूर्वक जीने का कार्यक्रम है।

   हमारा कार्यक्रम एक है।

3. Potential क्षमता
   - मैं निरंतर इच्छा, विचार, आशा संपन्न हूँ।
   - दूसरा भी निरंतर इच्छा, विचार, आशा संपन्न है।

   हमारी क्षमता एक जैसी है।

↓

The Other is Similar to Me **दूसरा मेरे जैसा है**

Differentiation भेद

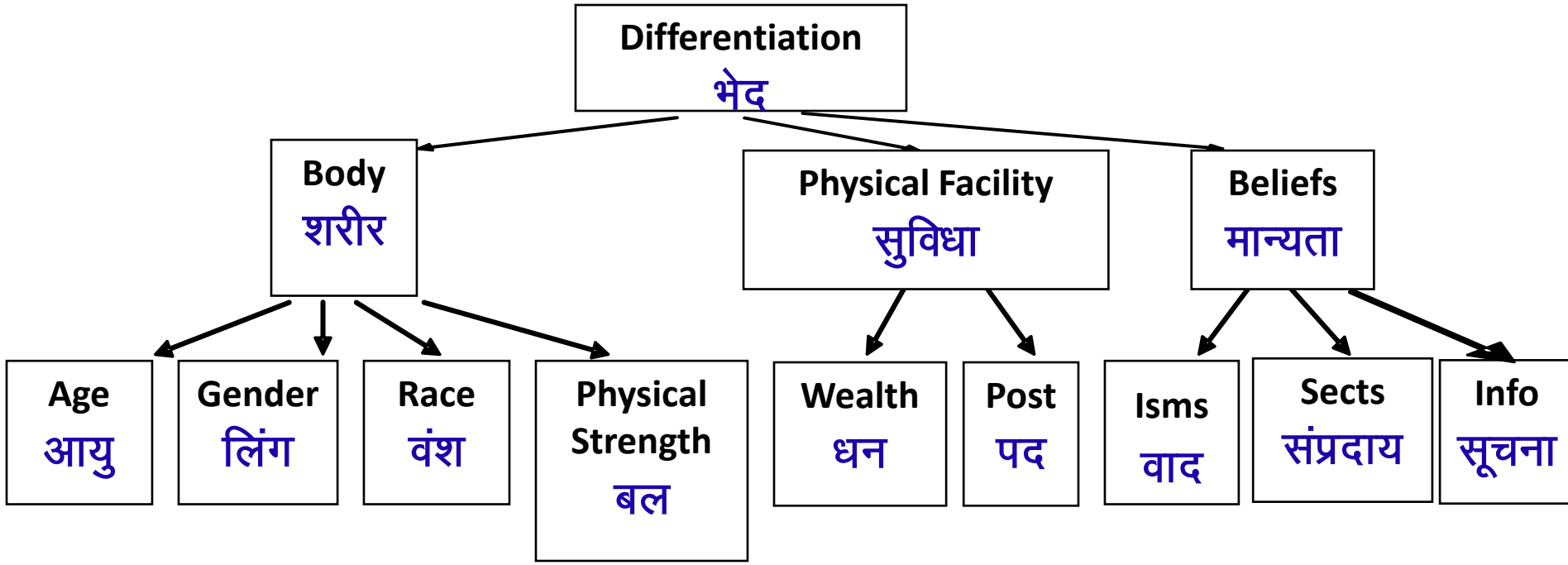

Differentiation = Disrespect

Not Naturally Acceptable… Opposition… Movement…

भेद = अपमान

सहज स्वीकार्य नहीं होता... विरोध... आन्दोलन...

सम्मान–सम्यक आंकलन– मैं के आधार पर

1. लक्ष्य–हमारा लक्ष्य सहज स्वीकृति एक जैसा है
2. कार्यक्रम– हमारा कार्यक्रम एक जैसा है
3. क्षमता– हमारी क्षमता एक जैसी है

दूसरा मेरे जैसा है।

4. योग्यता– योग्यता के आंकलन के आधार पर हम परस्परपूरकता का निर्वाह करते हैं।

यदि दूसरा मुझसे अधिक समझदार, जिम्मेदार है।

– मैं समझने को तत्पर होता हूँ।

यदि मैं दूसरे से अधिक समझदार,जिम्मेदार हूँ

– मैं दूसरे के साथ जिम्मेदारी पूर्वक जीता हूँ (निरंतर, बिना प्रतिक्रिया के)

– मैं दूसरे को सही समझने, जीने में सहयोग करता हूँ (संबंध में आश्वस्ति के आधार पर)

दूसरा मेरे जैसा है। हम परस्पर पूरक हैं।

स्वयं में विश्वास, अहंकार, अवसाद

सम्मान	अधिमूल्यन	अवमूल्यन / अमूल्यन
स्वयं में विश्वास	अहंकार	अवसाद
स्वतंत्रता (स्वयं पर निर्भरता)	परतंत्रता (दूसरे पर निर्भरता)	परतंत्रता (दूसरे पर निर्भरता)
निश्चित आचरण	अनिश्चित आचरण	अनिश्चित आचरण

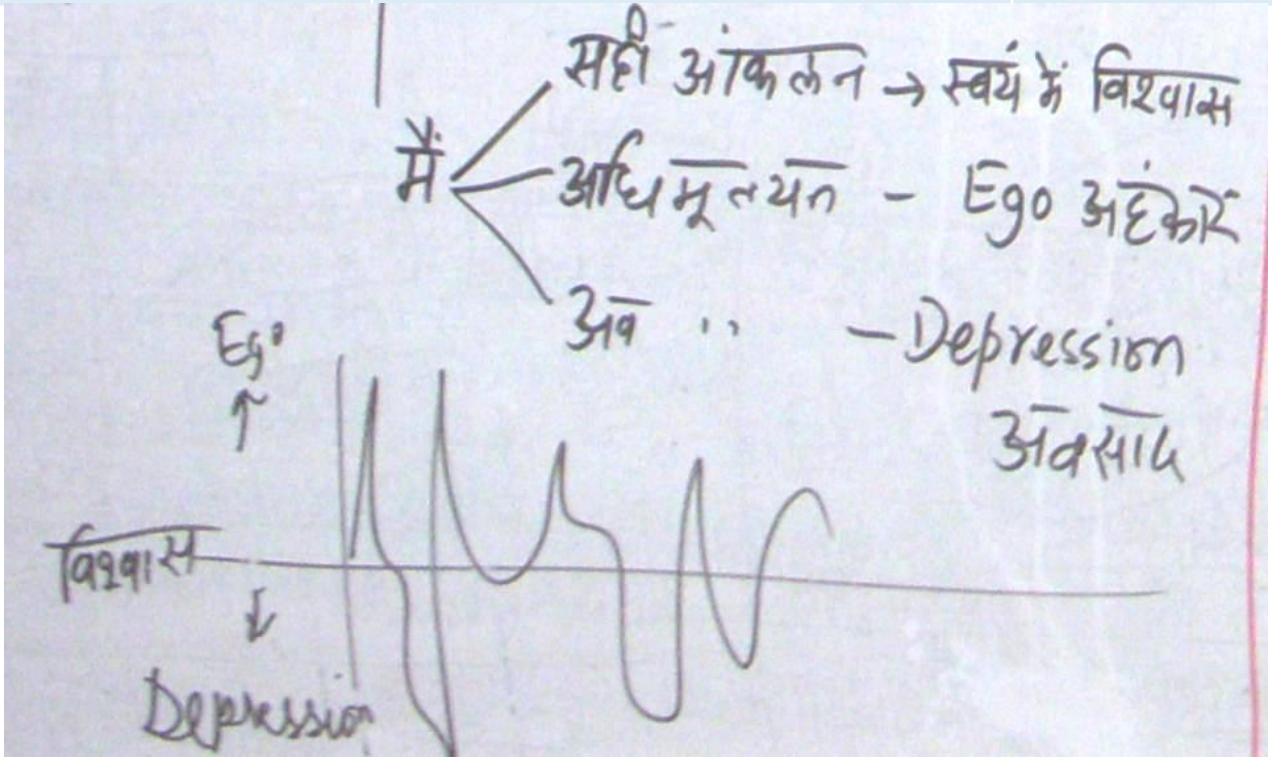

भेद

शरीर, सुविधा एवं मान्यता के आधार पर तुलनात्मक

मैं दूसने से भिन्न (विशेष) हूँ

मैं भेद को बढ़ाने में, दूसरे के शोषण में प्रवृत्त होता हूँ।

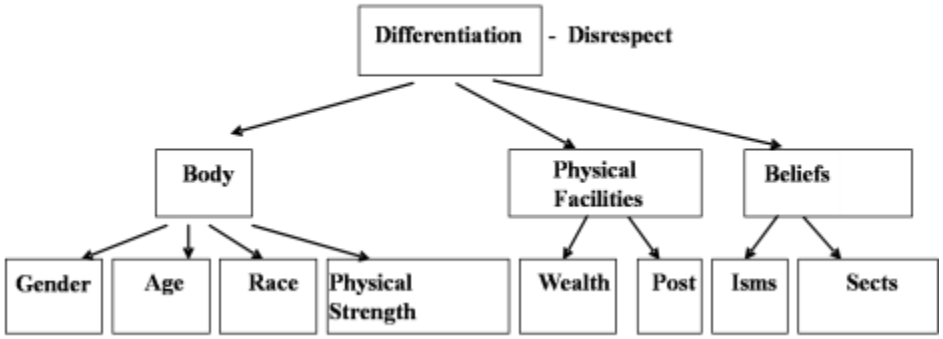

सम्मान – मैं के आधार पर

1. लक्ष्य–हमारा लक्ष्य सहज स्वीकृति एक है
2. कार्यक्रम– हमारा कार्यक्रम एक है
3. क्षमता– हमारी क्षमता एक है

दूसरा मेरे जैसा है।

हम परस्पर पूरक हैं।

यदि दूसरा मुझसे अधिक समझदार, जिम्मेदार है।

– मैं समझने को तत्पर होता हूँ।

यदि मैं दूसरे से अधिक समझदार,जिम्मेदार हूँ

– मैं दूसरे के साथ जिम्मेदारी पूर्वक जीता हूँ (निरंतर, बिना प्रतिक्रिया के)

– मैं दूसरे को सही समझने, जीने में सहयोग करता हूँ(संबंध में आश्वस्ति के आधार पर)

सारांश

सम्यक आंकलन ही सम्मान है।

अधिमूल्यन, अवमूल्यन अथवा अमूल्यन अपमान है।
भेद अपमान है।

सम्मान – मैं के आधार पर
दूसरा मेरे जैसा है (लक्ष्य, कार्यक्रम, क्षमता)
योग्यता में अंतर है– योग्यता के स्तर पर हम परस्पर पूरक हैं।

यदि दूसरा मुझसे अधिक समझदार, जिम्मेदार है।
– मैं समझने को तत्पर होता हूँ।
यदि मैं दूसरे से अधिक समझदार,जिम्मेदार हूँ
– मैं दूसरे के साथ जिम्मेदारी पूर्वक जीता हूँ(निरंतर, बिना प्रतिक्रिया के)
– मैं दूसरे को सही समझने, जीने में सहयोग करता हूँ(संबंध में आश्वस्ति के आधार पर)।